NOVATEUR PUBLICATIONS
JournalNX- A Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN No: 2581 - 4230
VOLUME 7, ISSUE 10, Oct. -2021

TANIMA PRIYA
RESEARCH SCHOLAR
DEPTT. OF HISTORY
RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

SUPERVISOR
DR. AKHILESH RAJAK
RADHA GOVIND UNIVERSITY, RAMGARH, JHARKHAND

प्रागैतिहासिक काल में धार्मिक इतिहास

सार

पुजा सम्बन्धी अवशेष – करनूल की गुफाओं से अग्नि तथा राख के चिन्हों से ऐसा लगता है कि उस समय के मानव चामत्कारिक धार्मिक कृत्य करते थे ।[1] महादेव पहाड़ी की एक गुफा में स्वास्तिक रेखाकन[2] आपचन्द के समीप शिलाश्रयों कसे वृक्ष पुजा तथा स्वास्तिक पुजा के दृश्य अंकित है ।[3] उस समय के मानव माट्ट–देवता के उपासक थ । माट्ट–देवता तथा लिंग पुजा प्रचलित हुई; इस प्रकार की प्राचीन मूर्तियां मिली हैं। अन्त्येष्टि संस्कार विधि – लंघनाज पुरास्थल से कब्रिस्तान के अवशेष तथा यहाँ से 14 मानव कंकाल भी मिलते हैं । भीमबेठका की गुफा से अन्त्येष्टि प्रमाण प्राप्त हुए हैं । लेखहिया से 17 नर–कंकाल प्राप्त हुए है जिनके अधिकांश के सिर पश्चिम दिशा में हैं । सरायनाहर राय की

[1] प्राचीन भारत का इतिहास : वी.डी. महाजन, पृ. 34
[2] भारतीय संस्कृति और कला : वाचस्पति 'गैरोला', पृ. 84
[3] प्रौगेतिहासिक भारतीय चित्रकला : जगदीश गुप्त, पृ. 84

खुदाई से 14 शवाधान तथा 8 गर्त–चूल्हे प्राप्त हुए हैं । सरायनाहर राय तथा महदहा से की समाधियों से इस काल के लोगों की अन्त्येष्टि विधि के बारे में जानकारी मिलती है । ज्ञात होता है कि ये अपने मृतकों को समाधियों में गाड़ते थे उनके सिर पश्चिम तथा पैर पूर्व की ओर हैं । किसी–किसी समाधि में स्त्री पुरुष को साथ–साथ दफनाया जाता था । उनके साथ खाद्य–सामग्री तथा पत्थर और हड्डी के उपकरण रखते थे । दमदमा से 41 मानव शवाधान तथा कुप गर्त चुल्हे मिले हैं। गुफकराल की खुदाई से पता चलता है कि मनुष्यों के साथ पालतु कुत्तों को भी दफनाने की प्रथा थी ।

1. लोकोतर जीवन में विश्वास – अन्त्येष्टि संस्कार विधि में मनुष्यों के साथ उपकरण तथा अनेक वस्तुएँ दफनाई जाती थी इससे सिद्ध होता है कि लोग लोकोत्तर जीवन में विश्वास रखते थे ।[4]

ख. सैन्धवकालीन धार्मिक इतिहास

1. माहदेवी की उपासना – सैन्धवकालीन स्थलों मिट्टी की बहुसंख्यक नारी मूर्तियाँ मिलती हैं तथा मुहरों के ऊपर भी नारी आकृतियों का अंकन विविध रूपों में हुआ है । सर जॉन मार्शल के अनुसार मातादेवी के सम्प्रदाय का सैन्धव संस्कृति में प्रमुख स्थान था । इनके सिर पर रंख के समान फैला हुआ आभरण है, लड़ियों का हार, चूड़ियाँ, मेखला, कर्णफूल आदि पहने हुए हैं । शिराभरण के दोनों और दीपक जैसी आकृति

[4] वही–75, पृ. 22,23,24,25

है जिनमें धूएँ के चित्र दिखाई देते हैं । मोहन–जोदड़ो से एक स्त्री मूर्ति मिली है जिसे देवी कहा गया है इसके सिर पर पंख के समान फैला हुआ एक आभरण है। हड़प्पा से प्राप्त एक नारी मूर्ति के गर्भ एक पौधा निकल रहा है । एक दूसरी मुद्रा पर पीपल के वृक्ष की दो शाखाओं के बीच एक स्त्री का चित्र है तथा पेड़ के नीचे एक बकरा है तथा मनुष्यों की भीड़ का चित्रण है इससे स्पष्ट है कि बकरे की बलि मातृ–देवी की उपासना से सम्बन्धित थी ।[5] हड़प्पा से प्राप्त एक खड़ी स्त्री मूर्ति के सिर पर उठा हुआ ओपश या पंखे जैसा उष्णीव है ।[6] कुछ मृत्मुर्तियों में स्त्रियां तीन पैरों वाली कुर्सियों पर बैठी हुई दिखाई गई है ।[7]

2. शिव मानव देवता की उपासना – मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुद्रा के ऊपर पद्मासन की मुद्रा में विराजमान एक योगी का चित्र मिला है । पुरुष की दायीं और चीता तथा हाथी, तथा बाई आर गैंडा और भैसा चित्रित हैं ।[8] सामने एक दो सींग वाला हिरण भी है ।[9] सिर पर एक त्रिशुल जैसा आभूषण है। इसके तीन मुख हैं । मार्शल ने इस देवता को 'रुद्र शिव' कहा है । शिव से सम्बन्धित दो मुद्रायें मिलती हैं । एक में चौंकी पर योगासन में विराजमान है । इसके तीन मुख हैं । मुद्रा

---

[5] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 46, 47

[6] प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला : डॉ. श्याम शर्मा, पृ. 30

[7] प्राचीन भारतीय प्रतिमा - विज्ञान एवं मूर्तिकला : ब्रजभूषण श्रीवास्तव, पृ. 229

[8] वही–1, पृ. 47,48

[9] प्राचीन भारतीय प्रतिमा - विज्ञान एवं मूर्तिकला : ब्रजभूषण श्रीवास्तव, पृ. 247

श्रृंगयुक्त है । उसके सिर से वनस्पति निकलती दिखाई देती है । दूसरी मुद्रा भी श्रंगयुक्त है किन्तु एक मुखी है और भूमि पर बैठी है । एक अन्य मुद्रा पर बनी आकृति में आधा भाग मनुश्य का तथा आधा भाग बाघ का है यह भी श्रृंग युक्त है । हड़प्पा से भी तीन पंखों का आभरण धारण किए दो देवताओं की दो मुद्राएं मिली हैं ।[10]

3. पशु उपासना – सिन्धु घाटी से पशुओं की अनेक मुर्तियाँ तथा मुहरें प्राप्त हुई हैं पशुओं की मूर्तियों में हाथी, गेंडा, सूअर, बन्दर, भेड़, बैल, घोड़ा आदि प्राप्त हुई है ।[11] मुद्राओं पर गेंडे, भैंस, हाथी, व्याघ्र, घडियाल, हिरण, कुत्ते, बन्दर[12], भरे हुए कन्धों वाला महाकाय वृषभ, छोटे सींगों वाला नटुआ बैल, महिष[13], एक सींग वाले बैल की अनेक मुद्राएँ मिली है इसको अत्यन्त पवित्र समझा जाता था । मोहनजोदड़ों से एक ताम्र–पत्र प्राप्त हुआ है इस पर काटकर कुबड़वाला बैलबना हुआ है जो शक्ति के रूप में पुजा जाता था । सम्भवतः इनमें से कुछ पशुओं की पुजा की जाती होगी कुछ का खिलौनों के रूप में प्रयोग होता होगा ।[14]

4. लिंग तथा योनी की उपासना – उत्खनन में बहुसंख्या में शिवलिंग आकार के पत्थर प्राप्त हुए हैं, जिनकी उपासना की

---

[10] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 47, 48

[11] प्राचीन भारतीय कला, वास्तुकला एवं मूर्तिकला : डॉ. श्याम शर्मा, पृ. 31

[12] भारतीय कला : वासुदेव शरण अग्रवाल, पृ. 249

[13] प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला : ब्रजभूषण श्रीवास्तव, पृ. 249

[14] प्राचीन भारत : प्रतियोगिता दर्पण, पृ. 25

जाती थी, इसके अतिरि हड़प्पा और मोहनजोदड़ों से बहुसंख्या में चीनी मिट्टी अथवा सीप के बने छल्ले प्राप्त हुए हैं इनके आधार पर विद्वानों का मानना है कि ये छल्ले योनियां हैं जिनकी पुजा सिन्धुवासी जनन शक्ति के रूप में करते थे ।

5. सूर्य तथा अग्नि की उपासना – उत्खनन से प्राप्त अनेक मुहरों पर स्वास्तिक, चक्र तथा अग्निशालाओं के अवशेष प्राप्त हुए हैं इनके आधार पर पुरातत्त्ववेत्ताओं का विचार है कि सिन्धुवासी सूर्य तथा अग्नि की उपासना करते थे ।
6. नाग पूजा – एक चित्रित मिट्टी के बर्तन पर बैठे हुए देवता के सिर के ऊपर नाग देवता का चित्र बना है । मिट्टी के बर्तनों पर सर्प के कुछ चित्रण मिलते हैं । लोथल से प्राप्त तीन बर्तन के टुकड़ों पर सर्प की आकृतियाँ बनी हुई हैं । इससे सिद्ध होता है कि सिन्धुवासी नाग पूजा करते थे ।[15]
7. वृक्ष तथा पक्षी पूजा – सैंधव निवासी विभिन्न प्रकार के वृक्षों तथा पक्षियों की पूजा करते थे । मुद्राओं में पीपल, नीम, खजूर तथा बबूल वृक्षों का अंकन हुआ है । सिन्धुवासी पीपल के वृक्ष को पवित्र मानते थे मुद्राओं पर इसी का सबसे अधिक अंकन हुआ है । पक्षियों में फारत्ता को सबसे पवित्र माना जाता था ।[16] इसके अतिरिक्त मोर, मुर्गे तथा बत्तख का अंकन

[15] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 48
[16] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 48

मुद्राओं पर मिलता है । इनका भी कोई न कोई धार्मिक महत्त्व रहा होगा ।[17]

8. धार्मिक प्रथाएं – सिन्धु–सभ्याता के अवशेषों से सिंधुवासियों की अनेक धार्मिक प्रथाओं के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। मोहनजोदड़ो से बृहत् स्नानागार के मिलने से विद्वान अनुमान लगाते हैं कि धार्मिक उत्सवों में लोग स्नानकुण्ड में स्नान करते थे । मोहनजोदड़ो से ही एक विशाल भवन के अवशेष मिले हैं । जिसे विद्वान पुरोहित भवन कहते हैं । हड़प्पा से प्राप्त एक मुद्रा में किसी समारोह का अंकन हुआ है ।[18] पूजा में गाने बजाने के भी संकेत प्राप्त हुए हैं । मुद्राओं पर ढोलवादक का अंकन हुआ है । अनेक प्राप्त ताबीजों तथा अग्निशालाओं से धार्मिक प्रथाओं के संकेत मिलते हैं । ताबीजों के आधार पर इतिहासकार अनुमान लगाते हैं कि सिन्धुवासी अन्धविश्वासी थे ।[19]

9. अन्त्येष्टि संस्कार – प्रतीत होता है कि सिन्धुवासी शवों को जला दिया करते थे उपर्युक्त अनुमान इस आधार पर लगाया गया है कि खुदाई के समय मिले घड़े मनुष्य की राख और हड्डियों से भरे हुए हैं । कुछ बर्तनों में राख व हड्डियों के साथ आहुति व अन्य चढ़ावे भरे हुए हैं । सर आरेन स्टाइन

---

[17] प्राचीन भारतीय प्रतिमा विज्ञान एवं मूर्तिकला : बृजभुषण श्रीवास्तव, पृ. 249

[18] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 33,66

[19] प्राचीन भारत : प्रतियोगिता दर्पण, पृ. 25

को इस प्रकार के घड़े बलोचिस्तान के विभिन्न स्थानों से प्राप्त हुए हैं ।

10. पारलौकिक जीवन में विश्वास – अन्तेष्टि संस्कार में राख तथा हड्डियों के साथ दैनिक उपभोग की वस्तुओं के प्राप्त होने से अनुमान है कि सिन्धुवासी पारलौकिक जीवन में विश्वास रखते थे ।[20]

ग. वैदिककालीन धार्मिक इतिहास

1. देवी–देवताओं का वर्णन – ऋग्वेद में एक स्थल पर रुद्र की रंगी हुई प्रतिमा का उल्लेख है । वरुण को सुनहला कवच पहने हुए अपने आसन पर बैठा हुआ दिखाया गया है । मरुत की प्रतिमा का प्रसंग दिया गया है । ऋग्वेद में कहा गया है कि पूजा के समय व्यक्ति इन्द्र तथा अग्नि को सजाते थे । इसके अतिरिक्त इन्द्र, सुशिप्र, रुद्र तथा वायु को दर्शन योग्य कहा है । एक स्थान पर इन्द्र के लिए कहा गया है – कौन मेरे इन्द्र को 10 गायां में खरीदेगा । शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए इन्द्र की प्रतिमा की पूजा की जाती थी । लौरिया नन्दनगढ़ से प्राप्त स्वर्णपत्र पर नारी मूर्ति वैदिक भीते से प्राप्त हुई है । यह प्रतिमा लगीाग 78वी श.ई.पू. की है विद्वानों ने इसे पृथ्वी देवी माना है ।[21] तैत्तिरीय ब्राह्मण में

[20] प्राचीन भारत का इतिहास : वी.डी. महाजन, पृ. 61

[21] प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्तिकला : डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव, पृ. 6,7,8,9

भारत में भारती, इडा और सरस्वती की स्वर्ण–प्रतिमाओं का उल्लेख है ।[22] यक्ष, नाग, गन्धर्व सूर्य तथा श्री लक्ष्मी देवी का उल्लेख वैदिक साहित्य में हुआ है ।[23] ऋग्वेद की कुछ ऋचाओं में चमड़े पर अग्निदेव के चित्र अंकित होने का उल्लेख मिलता है ।[24]

2. पूजा प्रतीक – प्रकाशबहल, नवदाटोली तथा रंगपुर से चक्र, स्वर्ण, मेखला, स्वास्तिक तथा सूर्य चिह्न आदि प्रतीक चिह्न प्राप्त हुए हैं जो वैदिक काल के हैं । इन्हीं प्रतीकों का वर्णन वैदिक साहित्य में हुआ है ।

3. वैदिक श्मशान – वैदिक काल में शमशान का निर्माण भी होता था । इनका आकार गालाकार, अण्डाकार होता था और इनके चारों और वेदिका–वाड़ का निर्माण होता था । ये चबुतरों के रूप में बनते थे । ऋग्वेद में आर्यों की समाधि का एक रूप मृण्मय गृह भी था । शायद यह एक मकबरा था जिसमें कब्र के ऊपर या समीप कई कमरे बने थे । मृण्मय गृह के अनेक रूप थे – पर्वताकार या वर्तुलाकार । मृतक के शरीर पर मिट्टी का पहाड़ सा ढेर लगा दिया जाता था और एक लौग (लग्गा), इस पर खड़ा कर दिया जाता था। डॉ. ब्लाख ने लौरिया नन्दगढ़ में खुदाई के दौरान इस प्रकार की एक समाधि खोज की है ।

---

[22] प्राचीन भारत का सांस्कृतिक इतिहास : कृष्ण कुमार, पृ. 557

[23] प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान एवं मूर्तिकला : डॉ. बृजभूषण श्रीवास्तव, पृ. 8,9

[24] भारतीय कला की रूप-रेखा : राची रानी गुर्टू, पृ. 23

उन्हें लकड़ी के अनेक स्तम्भ तथा विभिन्न मिट्टी की तहों पर मनुष्य की हड्डियाँ मिली है ।

4. स्तूप निर्माण – ऋग्वेद में स्तूप शब्द का प्रयोग हुआ है । हो सकता है कि उस काल में अनार्थों के कुछ स्तूप रहे हों।

5. यूप निर्माण – यज्ञ के समय यूप प्रतिष्ठित करने की परम्पर थी । मन्त्रों द्वारा इस यूप की पूजा की जाती थी यूप की चौटी पर फुलों की माला रखी जाती थी । ब्राह्मण ग्रन्थों के अनुसार यूप अष्टपहल भी होते थे । चौकौर यूपों का भी उल्लेख मिलता है ।

6. यज्ञवेदियाँ – वैदिक काल में यज्ञ–वेदियों का भी निर्माण होता था इन्हीं यज्ञ वेदियों की रचना के मूल में हैवैल महोदय ने मन्दिरों के गर्भगृह और शिखरों के बीज देखें हैं। यज्ञ वेदियों में अनेक दिनों तक यज्ञ हुआ करते थे, अग्नि निरन्तर प्रज्वलित रहती थी । यज्ञ भूमि विभिन्न रूप से सुसिज्जित की जाती थी ।[25] यज्ञ वेदी कई प्रकार की होती थी– सौमिक वेदी–समछिबाहु चतुर्भुज के आकार की, सौत्रामणी और पैत्रिकी वेदियाँ भी समद्विबाहु चतुर्भुज के आकार की होती थी, चतुरस्र श्यनचित, वक्रपक्षव्यस्पुच्छश्येन तथा कंकचित ये तीन वेदिया पक्षी के आकार की होती थी, प्रउग तथा उभयतः प्रउग वेदियाँ समद्विबाहु चतुर्भज के आकार के समान होती थी । महादेवी सबसे बड़ी होती थी इसे सौमिकी भी कहा गया है ।[26]

---

[25] प्राचीन भारतीय प्रतिमा – विज्ञान एवं मूर्तिकला : डॉ. ब्रजभुषण श्रीवास्तव, पृ. 3,4

[26] वेदकालीन प्रौद्योगिकी : ओमप्रकाश पाण्डेय, श्यामसुन्दर निगम, पृ. 3–4

घ. महाकाव्य एवं महाजनपदकालीन धार्मिक इतिहास

1. यज्ञ विधान एवं कर्मकाण्ड – रामायण एवं महाभारत में अनेक वैदिक यज्ञों का उल्लेख मिलता है परन्तु यज्ञों में होने वाली हिंसा का विरोध किया गया । महाकाव्यों के समय तक आते–आते वैदिक धर्म का स्वरूप बिल्कुल परिवर्तित हो गया। पूर्व–वैदिक कालीन कर्मकाण्ड प्रधान तथा उत्तर–वैदिक कालीन ज्ञान प्रधान धर्मो का समन्वय करके इस समय एक लोक धर्म का विकास किया गया । वैदिक देवताओं की प्रतिष्ठा का महत्व कम तथा नए देवी–देवताओं की प्रष्ठिता हुई इनमें ब्रह्म, विष्णु तथा महेश (शिव) को त्रिमुर्ति कहा गया । गीता में कर्म की महत्ता प्रतिपादित की गयी है ।[27]

2- जैन धर्म और बौद्ध धर्म का उदय – जैन धर्म 24वें तीर्थ कर महावीर स्वामी का जन्म 540 ई०पू० में वैशाली के समीप कुण्डग्राम में हुआ । महाबीर की मृत्यु पावापूरी के मल्लों के वंशज राजा शास्तिपाल के महल में हुई ।[28] जैन अनुश्रुतियों के अनुसार महाबीर के समय में जैन धर्म काफी प्रचलित हो गया था और जैन संघ में 14 लाख श्रमण, 36 लाख श्रमणियों, 1 लाख 59 हजार श्रावक, 3 लाख 18 हजार श्राविकाएँ थी ।[29] बौद्धों की तरह जैनियों ने भी भिक्षु–ग्रहों और गुफाओं का निर्माण किया। इनमें भिक्षु रहा करते थे । उनके इन

---

[27] प्राचीन भारत का इतिहास तथा संस्कृति : के.सी. श्रीवास्तव, पृ. 94

[28] प्राचीन भारत का इतिहास : वी.डी. महाजन, पृ. 145, 148

[29] प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व : डॉ. आर. शरण, पृ. 12

निवास–स्थानों का पता आज भी उदयगिरि में सिंह–गुफा, ऐलोरा में इन्द्र सभा, आबु पर्वत, गिरनार, पार्श्वनाथ की पहाड़ी, के भग्नावशेष, जोधपुर में रणपुर, बुन्देलखण्ड में खजुराहों, आदिनाथ मन्दिर और चितौड़ आदि से मिलता है ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

3. झा, डी.एन. कृष्णमोहन : **प्राचीन भारत का इतिहास बुद्धिज्म इन**

   श्री माली **क्लासीकल ऐज**, दिल्ली, 1985

4. पाण्डेय, वी.सी. : **प्राचीन भारत का इतिहास**, दिल्ली, 2014

5. पाठक, विशुद्धानन्द : **पांचवीं–सातवीं शताब्दी का भारत**

   बील, सैमुअल : **बुद्धिस्ट रिकार्ड ऑफ द वेस्ट्न वर्ल्ड**, दिल्ली, 1995

6. ..... : **दी लाइफ ऑफ ह्वेनसांग**, दिल्ली, 1973

7. ..... : **दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान एंड सुग युन**, दिल्ली, 1998

8. मुखर्जी, पी.के. : **इंडियन लिट्रेचर इन चाईना एण्ड फार ईस्ट,** कलकत्ता, 2012

9. मार्शल, नागौरी, एस.एल. : **प्रिंसीपल्स ऑफ इक्नोमिक्स,** प्राचीन भारत

10. मजूमदार, आर.सी. : **दी क्लासीकल ऐज**, भारतीय विद्या भवन, बम्बई, 2009

11. लेग्गे, जेम्स : **दी ट्रैवल्स ऑफ फाह्यान,** दिल्ली, 1971

12. वाटर्स, थामस : **ह्वेनसांग ट्रैवल्स इन इंडिया**, दिल्ली, 2011

13. सरकार, डी.सी. : **स्लैक्ट इन्सक्रिप्शन**, खण्ड 2, दिल्ली, 1983

14. शर्मा, रीता : **भारत का राजनैतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास**,दिल्ली, 2013

15.

16. शर्मा, ठाकुर प्रसाद : **ह्वेनसांग की भारत यात्रा**, दिल्ली, 2015

17.

18. त्काकुसु : **इत्सिंग, ऐ रिकार्ड ऑफ दी बुद्धिस्टिक रिलीजन ऐज प्रैक्टिस्ड्स इन इंडिया एण्ड दी मलाया आर्कियोलॉजी,** ऑक्सफोर्ड, 1896